हिन्दी दिवस विशेषाँक

द ग्लोबल टाइम्स

सितम्बर 2, 2024

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

भविष्य में करिअर की बेहतर संभावनाओं से भरपूर

हिमांक पाहुजा,
ऐमिटी ग्लोबल स्कूल, नौएडा कक्षा 8

कल्पना करते हैं एक ऐसे बुद्धिमान सहयोगी की जो पढ़ाई को हमारे हिसाब से ढाल सके, दफ्तर में उबाऊ कामों को चुटकी में निपटा सके। कुछ ऐसा ही है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)। यह एक खास कम्प्यूटर कोड है जो सीख सकता है और एक बुद्धिमान सहायक की तरह काम भी कर सकता है। एआई छात्रों और कामकाजी लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित कर रहा है, आइए इस पर नजर डालते हैं:

एआई की मदद से मज़ेदार पढ़ाई

छात्रों के लिए एआई एक धैर्यवान शिक्षक हो सकता है। एआई वाले टूल्स, सीखने की गति को आप अपने हिसाब से सेट कर सकते हैं। गणित हो या अन्य विषय में मदद चाहिए, एआई हर पल तत्पर है। एआई ऐसा प्रोग्राम है जो कठिन से कठिन विषय को आसानी से समझा सकता है। एआई निबंधों की जाँच करने या क्लास शेड्यूल बनाने जैसे कार्य करके शिक्षकों का समय भी बचा सकता है। इससे शिक्षक अपना ध्यान बाकी ज़रूरी कामों पर लगा सकते हैं जैसे, छात्रों का मार्गदर्शन करना और पढ़ाई को रोचक बनाना।

दफ्तरों में दमदार मददगार

दफ़्तरों में, एआई ऐसे साथी की तरह है जो बिना रुके काम करता रहता है। यह ई-मेल को अलग-अलग करना या डेटा का विष्लेषण करना, जैसे बार-बार होने वाले कामों को खुद कर सकता है, जिससे लोगों को ज़्यादा रचनात्मक काम करने का समय मिलता है। उदाहरण के लिए, ऐसे एआई सहायक की कल्पना करते हैं जो वेबसाइट पर ग्राहकों के सवालों का जवाब दे सके या डॉक्टरों की एक्स-रे जाँचने में मदद कर सके। एआई बड़ी मात्रा में डेटा का विष्लेषण करके ऐसे रुझानों को भी बता सकता है जिन्हें शायद इंसान नोट न कर पाएँ। इससे कंपनियों को बेहतर फैसले लेने में मदद मिलती है।

भविष्य रोशन है (और बुद्धिमान भी)

एआई के बढ़ते इस्तेमाल के साथ, काम और पढ़ाई का माहौल भी बदल रहा है। लेकिन ऐसा नहीं है कि रोबोट सारा काम संभाल लेंगे, बल्कि एआई ऐसा उपकरण है जो हमें और ज़्यादा स्मार्ट और कुशल बना सकता है। छात्रों के लिए ज़रूरी है कि वे एआई वाले भविष्य के लिए तैयार रहें। एआई के बारे में सीखना और यह कैसे काम करता है, ये ऐसे महत्त्वपूर्ण कौशल हैं जिन्हें भविष्य में किसी भी करियर में काम आएँगे। एआई सीखने और काम करने में हमारी मदद करने के लिए है और यह भविष्य की ढेर सारी संभावनाओं से भरा हुआ है। जी ही

अंतरमन का प्रकाश

आप सभी को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। हमारे महान राष्ट्र के महान शिक्षक और द्वितीय राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिवस के उपलक्ष में मनाया जाने वाला यह दिन, समर्पित है विश्व के अनेक अध्यापक / अध्यापिकाओं को जो संपूर्ण निष्ठा से जीवनों को ज्ञान से प्रकाशित करते हैं। और मुझे गर्व है हमारे ऐमिटी के सभी शिक्षक शिक्षिकाओं पर जो रात-दिन बिना थके, बिना रुके हमारे ऐमिटी के बच्चों को सिर्फ शिक्षित ही नहीं, वरन उन्हें एक संपूर्ण मानव बनाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

डॉ. (श्रीमती) अमिता चौहान
चेयरपर्सन
ऐमिटी ग्रुप ऑफ स्कूल्स

गुरु की आवश्यकता स्वयं ईश्वर को भी होती है, संसार को गीता का उपदेश देने वाले श्री कृष्ण ने स्वयं महर्षि संदीपनि से दीक्षा ली, और ज्ञान की देवी माँ सरस्वती को वेदों का ज्ञान विष्णु अवतार हयग्रीव ने कराया।

कबीर जी का दोहा,

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय,
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।

कितना सुन्दर व्याख्यान है कि गुरु ईश्वर से भी पहले है क्योंकि वही हमारी अज्ञानता के अँधेरे को दूर कर हमें परमात्मा, प्रकृति और जीवन का ज्ञान करा सकता है।

किन्तु क्या हो जब प्रकाशपुंज गुरु ही स्वयं को अन्धकार में अनुभव करे? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिए मैंने कई प्रख्यात गुरुओं की जीवनियां पढ़ीं और पाया कि चाहे बुद्ध हों या अब्दुल कलाम, सभी ने ऐसे अंधकार को कभी न कभी अनुभव किया और उसे अपने भीतर के प्रकाश से ही दूर किया। सूर्य धरती को प्रकाशित करता है किन्तु बादल छाने पर उसका प्रकाश छुप जाता है, गायब नहीं होता, उसी प्रकार अंधकार का समय गुरु के भीतर के ज्ञान को छुपा नहीं सकता। किसी भी प्रकार का अंधकार मूलत: अज्ञानता ही होती है और अंतर्मन का विश्लेषण ही उस अन्धकार को मिटा सकता है।

गीता के पांचवे अध्याय का सोलवह पद्य है:

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मन:।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्।। 16

इसका अर्थ है कि, जिनका अज्ञान आत्मज्ञान द्वारा नष्ट हो जाता है उनके लिए वह ज्ञान सूर्य के समान परमात्मा को प्रकट करता है। आत्मज्ञान ही वह प्रकाश है जो एक शिक्षक को गुरु बनाने के मार्ग पर अग्रसर करता है। इसलिए गुरु को धैर्य और संयम से अपने अंतर्मन की ओर मुखर होकर प्रकाश की राह स्वयं खोजनी चाहिए।

बच्चों के मनोविकास के लिए बाल साहित्य जरूरी है

हिन्दी साहित्य जगत में बाल साहित्यकार, समीक्षक डॉ. ओम निश्चल एक जाना-माना नाम है। हिन्दी बाल साहित्य के विभिन्न मुद्दों पर ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम सैक्टर 46 के अध्यापक केशव मोहन पाण्डेय ने उनसे चर्चा की। प्रस्तुत हैं प्रमुख अंश:

साहित्य क्या है?

साहित्य वह पाठ्य-रूप है जिससे मनुष्य का विकास होता है। साहित्य संवेदनशील नागरिक बनने में हमारी मदद करता है। विभिन्न साहित्यकारों ने साहित्य को अपनी-अपनी तरह से परिभाषित किया है लेकिन उसका मूल आशय यही है कि साहित्य मनुष्य को मनुष्य बनाता है।

क्या वाकई साहित्य समाज का दर्पण होता है?

यह सच है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। जो समाज में घटित हो रहा है उसका प्रतिबिम्ब उस समय के साहित्य में मिलता है। यह कहना कि लेखक ऐसा कुछ लिख रहा है जो समाज में नहीं दिखाई देता, ऐसा नहीं है। लेखक समाज के मनोविज्ञान का परीक्षण करता है और तब अपने कथानक को जन्म देता है। आज साहित्य केवल दर्पण ही नहीं बल्कि समाज की आलोचना भी है। एक अच्छा व्यंग्यकार, जैसे हरिशंकर परसाई, शरद जोशी और श्रीलाल शुक्ल जैसे लेखक रहे हैं। उन्हें पढ़ें तो लगेगा समाज बुराइयों का गढ़ है और व्यंग्यकार के पास क्या अद्भुत भाषा है जिसके माध्यम से वह समाज की बुराइयों पर व्यंग्य कर रहा है।

बाल-साहित्य क्यों जरूरी है?

बाल साहित्य बच्चों के मनोविकास के लिए बहुत आवश्यक है। बाल-साहित्य पढ़ने से बच्चों में कल्पनाशीलता का विकास होता है। बच्चों को कहानी, नाटक, हास्य-व्यंग्य, चरित्र-मूलक आलेख पढ़ने को मिल सकें तो इनके पठन-पाठन से बच्चों में एक खास तरह का उत्साह पैदा होता है जो स्वस्थ सामाजिक चेतना के निर्माण में सहायक होता है।

तमाम बाल-पत्रिकाएँ आज बंद हो गई हैं, क्यों?

बाल-पत्रिकाएँ जो बच्चों में अच्छे संस्कारों का निर्माण करती थीं, आज बहुत कम है। भारत एक बहुभाषी देश है। भारतीय संविधान में 22 भारतीय भाषाएँ स्वीकृत हैं। इस दृष्टि से यदि

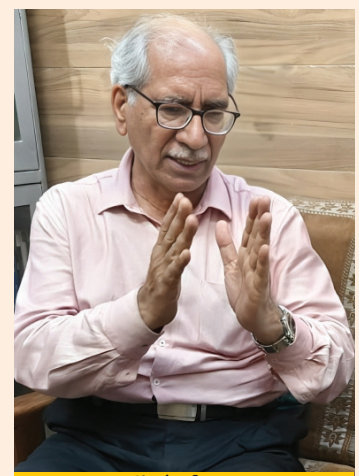

डॉ. ओम निश्चल

बच्चों में मानवता का विकास करना है, उन्हें जिम्मेदार और प्रगतिशील मूल्यों से तथा भारतीय मूल्यों से जोड़ना है तो हमें विभिन्न भारतीय भाषाओं में बाल-साहित्य की पत्रिकाएँ उपलब्ध करानी होगी। जहाँ तक अनेक बाल पत्रिकाओं के बंद होने की बात है तो कुछ बाल पत्रिकाएँ- जैसे बाल भारती, चंपक आदि आज भी प्रकाशित हो रही हैं। कुछ समाचार पत्र भी नियमित रूप से बाल साहित्य पर थोड़ी बहुत सामग्री प्रकाशित करते हैं। नई पत्रिकाओं ने जन्म नहीं लिया क्योंकि सोशल मीडिया ने अपने स्तर पर बहुत सारा बाल साहित्य त्वरित मात्रा में उपलब्ध कराया है।

हिन्दी के प्रति बच्चों में पनप रही अरुचि का क्या कारण है? इसे कैसे दूर किया जाए?

हिन्दी के प्रति अरुचि बच्चों के माता-पिता में देखी जानी चाहिए कि वे किस हद तक हिन्दी के प्रति रुचि रखते हैं। समाज तेजी से बदल रहा है। अब वह देसी समझ नहीं है जो राष्ट्रवादी भावना से सम्पन्न है। माता-पिता यही चाहते हैं कि उनके बच्चे अँग्रेजी स्कूलों में पढ़ें, अँग्रेजी में बातचीत करें, न केवल विद्यालय में बल्कि घर में भी। अँग्रेजी माध्यम स्कूलों के प्रति एक तरह का आकर्षण या प्राथमिक आकर्षण माता-पिताओं में ही है जिसे वे आज भी छोड़ नहीं पा रहे हैं। उनकी धारणा है कि अँग्रेजी स्कूल से निकला बच्चा आईएएस, पीसीएस, इंजीनियर, डॉक्टर ही बनेगा, जबकि ऐसा नहीं है। इसलिए बच्चों में जो हिन्दी के प्रति रुचि कम हुई है उसके पीछे माता-पिता का दोष है।

यह और बात है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाएँ बच्चों को पढ़ने के लिए अधिकृत रूप से मान्य की गई है और उसी के अनुसार पाठ्यक्रमों का निर्माण किया जा रहा है। यदि हमारे माता-पिता हिन्दी के प्रति अच्छी धारणा रखें, अपने बच्चों को हिन्दी कविताएँ सुनाएँ, ऐसी कहानियाँ सुनाएँ जो प्रेरक हो तो कोई कारण नहीं कि बच्चे हिन्दी के प्रति रुचि न विकसित करें।

साहित्य को कोई भी छात्र जीविका का साधन कैसे बना सकता है?

साहित्य अनिवार्य रूप से जीविका का साधन नहीं है। यह और बात है कि यदि आप साहित्य के प्रति निष्कृति हैं तो इसे व्यावसायिक रूप से अपनाया जा सकता है, जैसे यदि आप कहानी लिखते हैं, उसका नाट्य रूपांतरण होता है, उसपर फिल्म बनती है, कई भाषाओं में डब होती है, अनूदित होती है, सोशल मीडिया, रेडियो, टेलीविजन पर प्रसारित होती है, पॉड कॉस्ट पर प्रसारित होती है तो इससे उसका एक व्यावसायिक रूप बनता है।